OM SAI RAM

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

प्रमुख जनांदोलन एवं आदिवासी विद्रोह
Important Mass Movements & Trival Revolts

" दोस्तो ! भारत के आधुनिक इतिहास में 1857 के विद्रोह का एक महत्वपूर्ण स्थान है, वही अनेक जनांदोलनो व आदिवासी विद्रोह ने भी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज की है। आइए इन जनांदोलनों के बारे में संक्षेप में अध्ययन करते हैं -

प्रारम्भिक विद्रोह के सामान्य कारण

राजनीतिक कारण

1- सहायक सन्धि प्रणाली
2- गोद प्रथा की समाप्ति लॉर्ड डलहौजी द्वारा
3- अवध के साथ विश्वासघात
4- दत्तक प्रथा की समाप्ति
5- अफगान- में अंग्रेजो की पराजय आदि।

सामाजिक कारण

इस काल में काले और गोरे का भेद स्पष्ट रूप से उभरने लगा था। अंग्रेजो द्वारा भारतीयों को गुलाम समझा जाता था।

धार्मिक कारण

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल में योग्यता की जगह धर्म को पद का आधार बनाया गया भारतीय धर्म का अनुपालन करने वालो को वेइज्जत किया जाता था।

आर्थिक कारण

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत के उद्योग धन्धो को नष्ट कर दिया तथा भूमिकों से बलपूर्वक अधिक से अधिक भूम करते थे।

दोस्तो! यही वो सामान्य कारण थे जिन्होंने भारतीयों को क्रान्ति करने की प्रेरणा दी।

सन्यासी विद्रोह

- यह विद्रोह 1770 में प्रारम्भ हुआ और 1820 तक चलता रहा। यह विद्रोह बंगाल में अंग्रेजो के विरुद्ध था। इस विद्रोह का प्रमुख कारण तीर्थ-यात्रियों पर प्रतिबन्ध लगाया जाना था। सन्यासियों ने अंग्रेजो के विरुद्ध शस्त्र विद्रोह शुरू कर दिया था. इनमें अधिकतर सन्यासी शंकराचार्य के अनुयायी थे। इस विद्रोह को 1820 तक कुचल दिया गया। इस सन्यासी विद्रोह का उल्लेख वन्दे मातरम के रचयिता बंकिम चन्द्र चटर्जी ने अपने उपन्यास आनंद मठ में किया है। इस विद्रोह को वारेन हेस्टिंग ने कुचला था।

फकीर विद्रोह

- यद्यपि यह विद्रोह 18 वी शताब्दी में आरम्भ हुआ तथा 19वीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षो तक चलता रहा। फकीर बंगाल के घुमन्तू धार्मिक मुस्लमानों का समूह था। बंगाल के विलय के बाद 1776-77 में मजनूमशाह के नेतृत्व में फकीरो ने अंग्रेजो की उपेक्षा करते हुये जमींदारों से धन वसूलना शुरू कर दिया था। मजनूमशाह की मृत्यु के बाद इस विद्रोह को चिराग अली ने आगे बढ़ाया। भवानी पाठक व देवी चौधरानी इस विद्रोह के प्रमुख दो हिन्दू नेता थे। 19 वी शताब्दी के आरम्भिक वर्षों में अंग्रेजों द्वारा विद्रोह को दबा दिया गया।

चेरो (जागीरदारो) विद्रोह

- यह विद्रोह 1800 में शुरू हुआ तथा 1802 तक चला। इसकी शुरुआत बिहार के पलामू जिले में भूषण सिंह नामक जमींदार के नेतृत्व में शुरू हुआ था। इसका प्रमुख कारण कम्पनी द्वारा जागीरदारो की जमीन छीनी जाना था।

BY MOHIT TEZAS

पागलपंथी विद्रोह (1813-33)

- पूर्वोत्तर भारत में अंग्रेजो का जब स्थानीय प्रशासन पर कब्जा हो गया तो पागलपंथी संप्रदाय ने नेता टीपू के नेतृत्व में सत्य, समानता, भाईचारे के सिद्धान्त को लागू करने के लिए विद्रोह किया गया। इस विद्रोह ने अंग्रेजो को हिलाकर रख दिया लेकिन जल्द ही इस विद्रोह का दमन कर दिया गया। यह विद्रोह वस्तुतः गारो का था।

वहाबी आन्दोलन (1820-76)

- सैयद अहमद बरेलवी के नेतृत्व में विलायत अली, इनायत अली, मौलवी कासमी अबदुल्ला के साथ मिलकर वहावी आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन का मकसद भारत को अंग्रेजी हुकूमत से मुक्त कराकर मुस्लिम राज्य स्थापित कराना था।

कूका आन्दोलन

- भगत जवाहर माल (सियान साहब) व राम सिंह के नेतृत्व में शिष्य बालक सिंह के साथ पंजाब में अंग्रेजी हुकूमत को समाप्त करके सिक्ख राज्य स्थापित करना था। मुख्यालय हजारा में था। राम सिंह को म्यन्मार भेज दिया गया था।

रामोसी विद्रोह (1822)

- महाराष्ट्र में जब अंग्रेजी हुकूमत ने कर बढ़ा दिया तब तो मराठा सैनिको ने उमा जी के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया।

खासी जाति का विद्रोह

- इस विद्रोह का नेतृत्व तीरत सिंह ने खाम्पती और सिंहपो लोगो के साथ मिलकर अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोह की घोषणा कर दी। अंग्रेजो ने खासी पहाड़ी व सिलहट के बीच सड़क बनाकर सैनिक मार्ग बनाने की योजना इस विद्रोह का कारण था।

मुण्डा आन्दोलन

- मुण्डा विद्रोह या बिरसा विद्रोह का प्रारम्भ 1895 में छोटा नागपुर में 21 वर्षीय युवक बिरसा मुण्डा ने प्रारम्भ किया। इस आन्दोलन का मुख्य केन्द्र खूंटी था। बिरसा मुण्डा ने उलगुलान की उपाधि धारण कर स्वयं को भगवान का दूत घोषित कर दिया।

गाड़करी विद्रोह

- 1844 में महाराष्ट्र में गाड़करी जाति के विस्थापित सैनिको ने अंग्रेजो के विरुद्ध यह विद्रोह किया इस विद्रोह के केन्द्र सतमगढ़ कोल्हापुर थे। बावा अहीरेकर इस विद्रोह के प्रमुख नेताओं में रूप थे।

सावंतवादी विद्रोह

यह विद्रोह 1844 में हुआ जिसका नेतृत्व मराठा सरदार फोण्ड सावंत ने किया था।

छो-मुण्डा विद्रोह

छोटा नागपुर तथा सिंहभूम जिले में रहने वाले छो तथा मुण्डा लोगो ने कम्पनी के सैनिकों के साथ संघर्ष किया

खोंड विद्रोह

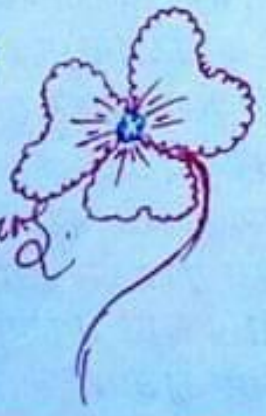
1846-55 ई० में चक्र बिशोई के नेतृत्व में उड़ीसा में मोरिया प्रथा को रोकने के प्रयास के कारण हुआ था।

अहोम विद्रोह

यह विद्रोह 1828-33 में असम में अहोम राज्य को ब्रिटिश राज्य में मिलाने के कारण गोमधर कुंवर व रूप चन्द्र के नेतृत्व में हुआ था

संथाल विद्रोह

यह विद्रोह 1855-56 में बिहार में आर्थिक शोषण के कारण सिद्धू एवं कान्हू के नेतृत्व में हुआ।



By- Mohit Tezu